(4) प्रादेशिक विधि :-

भूगोल के अध्ययन की प्राचीन प्रणाली राजनीतिक विभाजनों के आधार पर थी, परन्तु यह विधि अमनोवैज्ञानिक तथा अस्वाभाविक मानी गयी है। 1905 में हर्बर्टसन ने पृथ्वी को विशाल प्राकृतिक प्रदेशों में विभाजित कर उसके विषय में भौगोलिक वर्णन किया। उसी समय से भूगोल के अध्ययन में प्रादेशिक प्रणाली का जन्म हुआ। स्वाभाविक विभाजन द्वारा ही प्राकृतिक वातावरण का मानवीय क्रिया-कलापों पर प्रभाव ठीक रीति से पढ़ाया जा सकता है।

हर्बर्टसन ने प्राकृतिक वनस्पति को इन बड़े स्वाभाविक प्रदेशों का आधार माना, जो बहुत कुछ अंशों में जलवायु के भेदों पर निर्भर है। संसार को विभिन्न 18 प्राकृतिक प्रदेशों में विभक्त कर प्रत्येक में मानव मानव-क्रियाओं को प्रभावित करने वाले प्राकृतिक तत्वों के अध्ययन में यह विभाजन उपयोगी सिद्ध हुआ है। अधिकांश शिक्षक पहले प्राकृतिक आधारों को लेकर उसका मानवीय क्रिया-कलापों पर प्रभाव का अध्ययन करना अधिक उपयुक्त समझते हैं तथा कुछ शिक्षक पहले मनुष्यों पर प्रभाव का अध्ययन करके उनके प्राकृतिक कारण ढूँढने की रीति पसन्द करते हैं। आधुनिक काल में प्राकृतिक आधारों से मानव क्रिया-कलापों की ओर बढ़ने की रीति ही सर्वमान्य है और उपयुक्त प्रतीत होती है।

प्रादेशिक शीर्षक :- प्रादेशिक विधि इतनी महत्वपूर्ण है कि उसके व्यावहारिक रूप की विराट व्याख्या कर देनी चाहिए जिससे शिक्षक कक्षा में पढ़ाते समय कार्यान्वित कर सकें। इस पद्धति के अन्तर्गत आने वाली सामग्री तथा अशीर्षकों तथा उनके पढ़ाने की रीति का स्पष्टीकरण अत्यन्त आवश्यक है।

① पाठ्य-प्रदेश -
② स्थिति -
③ धरातल -
④ प्राकृतिक रचना -
⑤ जलवायु -
⑥ वनस्पति -

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

(7) वनैले एवम् पालतू पशु -
(8) खनिज सम्पत्ति -
(9) मानवीय तथा आर्थिक भूगोल -

प्रादेशिक विधि द्वारा भूगोल के लम्बे पाठ्यक्रम को मौखिक विधि से सीमित समय में समाप्त किया जा सकता है। शिक्षक प्रत्येक बालक पर दृष्टि रखता है, जिससे अनावश्यक बातों में वह अपना समय नष्ट नहीं करता है और छात्र ठीक निष्कर्ष निकालना सीखते हैं।

आधुनिक युग में यह विधि प्रमुख हो गयी है यह छोटी कक्षाओं में सफल नहीं हो सकती किन्तु मिडिल एवं माध्यमिक स्तर पर यही प्रणाली अधिक वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक मान्य और जनप्रिय है।

विभिन्न प्राकृतिक प्रदेशों के बीच कोई स्पष्ट विभाजन रेखा नहीं होती है, एक प्रदेश दूसरे के भीतर तक चला जा सकता है। अतः शिक्षक को सावधान रहना चाहिए, वरन् बालकों में भ्रम उत्पन्न हो सकता है। कभी-२ बड़े प्रदेशों को छोटे प्रदेशों में विभाजित कर पढ़ाया जा सकता है। इसी प्रकार प्रमुख देशों का भूगोल भी उनके प्राकृतिक प्रदेशों के आधार पर पढ़ाना चाहिए, किन्तु अध्यापन का क्रम उपर्युक्त क्रम से ही होना चाहिए।

प्रादेशिक विधि के गुण :- लाभ

(1) - भूगोल अध्ययन में इस विधि का अनुकरण करने से शिक्षक तथा छात्रों के समय तथा शक्ति की बचत हो जाती है।

(2) - इस विधि में व्यक्तिगत अध्ययन तथा व्यक्तिगत कार्य के लिए पर्याप्त क्षेत्र है। अध्यापक शिक्षण-विधि में व्यक्तिगत विधियों का प्रयोग कर सकता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान

④ यह विधि वैज्ञानिक पद्धति का अनुकरण करती है।

⑤ यह आधुनिक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुकूल है।

⑥ किसी प्रदेश के निवासियों के जीवन के विषय में उनकी भौगोलिक पृष्ठभूमि का अध्ययन पहले ही कर लेते हैं, जिससे अत्यन्त सरलता से 'कार्य-कारण' सम्बन्ध प्राकृतिक वातावरण और मानव-जीवन के मध्य स्थापित किया जा सकता है।

⑦ इस विधि द्वारा मानव-जीवन पर पड़ने वाले भौगोलिक नियन्त्रण को सुगमता से समझा जा सकता है। तथा मानवीय भाव पर अधिक जोर के कारण यह बालकों के लिए अधिक रुचिकर तथा मनोरंजक होता है।

~~दोष~~ दोष :-

① विभिन्न प्रदेशों की सीमाएँ पूर्णतया निश्चित नहीं हैं, कभी-कभी एक प्रदेश की सीमा का विस्तार दूसरे प्रदेश के भीतर तक चला जाता है तथा दोनों प्रदेशों के विभाजन के लिए स्पष्ट सीमा-रेखा खींचना कठिन हो जाता है।

② यह विधि पद्धति प्रारम्भिक कक्षाओं में नहीं अपनायी जा सकती है।

③ इस पद्धति में कभी-कभी भौगोलिक विषय-वस्तु की पुनरावृत्ति होती रहती है। जिसके कारण छात्र इसमें रुचि नहीं लेते हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

27-7-2020